13

# गुरु भक्त कालीबाई

आदिवासियों का गढ़ है– दक्षिणी राजस्थान। इस क्षेत्र का एक जिला है– डूँगरपुर। इस जिले में एक गाँव है– रास्तापाल।

आजादी से पहले यहाँ कोई सरकारी स्कूल नहीं था। उन दिनों यहाँ एक पाठशाला चलती थी। इसे प्रजा–मण्डल चलाता था। इस पाठशाला के संरक्षक थे– श्री नानाभाई खाँट। इसमें शिक्षण का काम करते थे– श्री सेंगाभाई रोत।

इस पाठशाला में आदिवासियों के बालक भी पढ़ते थे और बालिकाएँ भी। इन बालिकाओं में एक भील बालिका भी थी, कालीबाई कलासुआ। उसकी उम्र थी तेरह वर्ष। उन दिनों इस क्षेत्र के लोगों पर दोहरी मार थी। एक ओर तो अंग्रेजों का कठोर शासन था और दूसरी ओर सामंत सताते थे। हर व्यक्ति आजादी चाहता था।

उस समय पूरे देश में आजादी की लहर थी। राजस्थान भला कब पीछे रहता। प्रजा मंडल आजादी का विचार इन पाठशालाओं के द्वारा जन–जन तक पहुँचा रहा था।

सेंगाभाई बालकों को कभी अंग्रेजों के अत्याचार की कहानियाँ सुनाते तो कभी सामंती शोषण की। कालीबाई उन्हें ध्यान से सुनती। सुनते–सुनते उसका खून खौलने लगता। सेंगाभाई उसके लिए बहुत ही आदरणीय थे। भील बाला कालीबाई में भी एकलव्य की सी गुरु भक्ति के संस्कार थे। वह भी अपने गुरु की परम भक्त थी।

एक बार की बात है, प्रजा–मण्डल के सदस्यों की बैठक चल रही थी। वहाँ नानाभाई भी उपस्थित थे। उस बैठक में उन्होंने प्रण किया था, ''जब तक मेरी जान रहेगी, मैं अपने गाँव रास्तापाल की पाठशाला बंद नहीं होने दूँगा।'' वास्तव में वे चाहते थे कि हर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले। हर बच्चे के मन में देश–प्रेम की भावना जगे।

किन्तु यह बात रास्तापाल के जागीरदार को नहीं पची। वह नहीं चाहता था कि गाँवों के लोगों में शिक्षा का प्रसार हो। उसने इस पाठशाला को बंद करने का एक षड्यंत्र रचा। उसने गाँव के लोगों की एक बैठक बुलाई। नानाभाई को इस षड्यंत्र का पता चला। उन्होंने घर–घर जाकर लोगों को समझाया। एक भी व्यक्ति ने इस बैठक में भाग नहीं लिया।

गाँव के लोग जब बैठक में नहीं आए तो जागीरदार झल्ला उठा। उसने सामंत को सारी घटना नमक–मिर्च लगा कर कह दी। अगले दिन ही रियासत के पुलिस अधिकारी और जिला–न्यायाधीश दलबल सहित रास्तापाल पहुँचे।

19 जून, 1947 का दिन था, रास्तापाल की पाठशाला के बाहर एक ट्रक आकर रुका। कालीबाई उस समय खेत पर गई हुई थी। पाठशाला में सेंगाभाई और नानाभाई दोनों ही उपस्थित थे।

जिला न्यायाधीश ने सेंगाभाई से कहा, ''पाठशाला बंद करो और चाबी हमको दो।'' इस पर सेंगाभाई ने नम्रता से कहा, ''न्यायाधीश महोदय, आप तो न्याय करते हैं। हम आपके काम को ही तो कर रहे हैं। बालको को शिक्षा देना तो राज्य का काम है। आप उसे भी बंद करवाना चाहते हैं। यह तो कोई न्याय की बात नहीं है।''

जिला न्यायाधीश यह उत्तर सुनकर आग–बबूला हो गए और बोले, ''तुम मुझे न्याय सिखा रहे हो ? छोटे मुँह बड़ी बात करते हो ? सिपाहियों! इसे ट्रक से बाँध कर घसीटो।''

इधर वही बात पुलिस अधिकारी ने भी नानाभाई से कही। इस पर नानाभाई

हाथ जोड़कर बोले, ''साहब, यह पाठशाला तो प्रजा–मण्डल के आदेश से चल रही है, आपके आदेश से तो नहीं। आप इसे बंद क्यों करवाते हैं ? हमें पाठशाला चलाने दीजिए। इससे तो बालकों का भला ही होगा।''

पुलिस अधिकारी ऐसा उत्तर कैसे सहन करता ? उसके क्रोध का सागर उमड़ पड़ा। फिर क्या था ? उसका संकेत पाते ही सिपाही नानाभाई पर टूट पड़े। उन्होंने थप्पड़ों, घूँसों, डंडों और बंदूक के कुंदों से नानाभाई की जमकर पिटाई की। वे बुरी तरह घायल हो गए।

इसी बीच सेंगाभाई को ट्रक से बाँधकर घसीटा जाने लगा। नानाभाई से यह नहीं देखा गया। वे सेंगाभाई को बचाना चाहते थे। घायल अवस्था में भी वे खड़े होकर दौड़ने लगे। उन पर एक सिपाही ने जोर से बंदूक का कूंदा दे मारा। नानाभाई धड़ाम से गिर पड़े और ऐसे गिरे कि फिर कभी उठे ही नहीं।

सेंगाभाई को ट्रक से बाँध कर घसीटा जा रहा था। पाठशाला के बाहर गाँव के स्त्री–पुरुषों की भीड़ जमा हो गई, किन्तु किसमें हिम्मत थी कि सेंगाभाई को बचाते।

कालीबाई उस समय खेत से आ रही थी। उसके सिर पर घास का गट्ठर था, हाथ में थी हँसिया। अपने गुरुजी को इस हालत में देखकर उसकी भौंहें तन गई। उससे रहा नहीं गया। उसने आव देखा न ताव, घास का गट्ठर वहीं जमीन पर फेंक दिया। उसने ललकार कर कहा, '' ठहरो ! मेरे गुरुजी को इस तरह घसीटकर कहाँ ले जा रहे हो '' ? यह कहते हुए वह बिजली की तरह ट्रक की तरफ लपकी।

उसने ट्रक से बंधी रस्सी को हँसिया के एक झटके से काट दिया। उसके गुरुजी मौत के मुँह में जाने से बच गए किन्तु–अफसोस! सिपाहियों ने कालीबाई को गोलियों से भून दिया। उसे बचाने के लिए कुछ औरतें भाग कर आई। उन पर निर्मम

पुलिस ने गोलियाँ बरसाई।

एक तरफ नानाभाई का शव पड़ा था और दूसरी तरफ लहू से लथपथ कालीबाई।

फिर क्या था, अरावली की पहाड़ियों में भीलों के मारु–ढोल का मातमी स्वर गूँज उठा। देखते ही देखते हजारों भील रास्तापाल में एकत्र हो गए। विकट स्थिति को समझकर नानाभाई के हत्यारे भाग खड़े हुए।

कालीबाई को डूँगरपुर अस्पताल में भर्ती करवाया गया। वहाँ चालीस घंटे बेहोश रहने के बाद उस वीरबाला ने दम तोड़ दिया।

कालीबाई तो शहीद हो गई, किंतु उसने अपने गुरुजी को बचा लिया। एक नन्हीं ज्योति असमय बुझ गई, लेकिन हजारों दिलों में आजादी की अलख जगा गई।

## अभ्यास–कार्य

### शब्द–अर्थ

| | | |
|---|---|---|
| **सरकारी** | – | राजकीय |
| **संरक्षक** | – | देख–रेख करने वाला |
| **बाला** | – | लड़की, बालिका |
| **उम्र** | – | आयु |
| **अत्याचार** | – | ज्यादती |
| **संकेत** | – | इशारा |
| **निर्मम** | – | निर्दय, क्रूर |

**ढोल** – नगाड़े

**मातमी स्वर** – शोक या दु:ख भरी आवाज

**असमय** – समय से पहले

## उच्चारण के लिए

दक्षिणी, डूँगरपुर, रास्तापाल, मंडल, खाँट, सेंगाभाई, एकलव्य, षड्यंत्र, न्यायाधीश, डण्डों, हँसिया, भौंहें

## सोचें और बताएँ

1. आदिवासियों का गढ़ किसे कहा गया है ?
2. सेंगाभाई बालकों को क्या सुनाते थे ?
3. प्रजा मण्डल की बैठक में कौन–कौन उपस्थित थे ?

## लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें–

   (क) अंग्रेजों के अत्याचार की कहानियों को ध्यान से सुना जाता था।

   (अ) नानाभाई द्वारा (ब) सेंगाभाई द्वारा

   (स) कालीबाई द्वारा (द) न्यायाधीश द्वारा ( )

   (ख) सेंगाभाई को ट्रक से बाँधकर घसीटते देखा तो कालीबाई ने क्या किया ?

   (अ) जोर–जोर से चिल्लाई (ब) रोकने के लिए कहा

   (स) भीड में खड़ी हो गई (द) हँसिया से रस्सी काट दी ( )
2. आजादी का विचार कौन सी संस्था जन–जन तक पहुँचा रही थी ?
3. कालीबाई का खून क्यों खौलने लगता था ?
4. नानाभाई ने क्या प्रण किया ?
5. गाँव के लोगों ने जागीरदार की बैठक में भाग क्यों नहीं लिया ?
6. खेत से आते समय कालीबाई ने क्या देखा ?
7. कालीबाई ने जब रस्सी काट दी तो सिपाहियों ने क्या किया ?
8. रास्तापाल में हजारों भील एकत्र क्यों हो गए ?
9. नानाभाई के हत्यारे क्यों भाग गए ?

## भाषा की बात

- न्याय में 'अधीश' जोड़ कर न्यायाधीश बनता है। आप भी नीचे लिखे शब्दों में 'अधीश' शब्द जोड़ कर नए शब्द बनाएँ

| | | |
|---|---|---|
| न्याय + अधीश | – | न्यायाधीश |
| जिला | – | ..... |
| मठ | – | ..... |
| द्वारिका | – | ..... |
| गण | – | ..... |

- नीचे दिए गए शब्दों के अंतिम वर्ण 'ण' के स्थान पर 'क' जोड़कर पुनः लिखें

| | | |
|---|---|---|
| संरक्षण | – | संरक्षक |
| निरीक्षण | – | ..... |
| पोषण | – | ..... |
| शिक्षण | – | ..... |

- "अंग्रेजों के अत्याचार की कहानियाँ सुनकर कालीबाई का खून खौलने लगा।" इस वाक्य में लाल रंग में छपा अंश एक मुहावरा है। इसका अर्थ क्रोध आने लगा होता है।
  (1) पाठ में कुछ मुहावरे आए हैं। उनको छाँटकर लिखें।
  (2) शिक्षक से पूछकर इन मुहावरों के अर्थ जानें।

- पाठ में 'गुरुभक्त' तथा 'परमभक्त' शब्द आए हैं। 'भक्त' जोड़कर ऐसे ही नये शब्द बनाएँ।

- नीचे दिए उदाहरण के अनुसार क्रियाओं के रूप बदलकर वाक्य लिखें।
  (क) दौड़ना – मोहन दौड़ता है। रोशन दौड़ा। करीम दौड़ेगा।
  (ख) लिखना –

(ग) खाना –

(घ) पीना –

(ङ) खेलना –

(च) हँसना –

(छ) गाना –

## यह भी करो

- आपके पास–पड़ोस में अत्याचार का विरोध करने वाली कौन–सी घटना घटी है। चर्चा करें।
- तुम क्या करोगे यदि–

  (1) कोई जानवरों को पीट रहा हो ?

  (2)दो बालक आपस में झगड़ रहे हों ?

जिस तरह रंग सादगी को निखारता है, उसी तरह सादगी भी रंगों को निखार देती है।

–मुक्ता